P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-9, ISSUE-2 November -2020

E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

''कैलाशनाथ द्विवेदी के कथा–साहित्य में आँचलिकता'' (जय–पराजय के विशेष संदर्भ में)

Zonality in The Fiction of Kailashnath Dwivedi (With Special Reference To Jai Yaparajay)

Paper Submission: 16/11/2020, Date of Acceptance: 29/11/2020, Date of Publication: 30/11/2020

अशोक कँवर शेखावत
सहायक आचार्य,
संस्कृत विभाग,
राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
झालावाड़, राजस्थान, भारत

सारांश

समय एवं काल की सीमाओं से परे कवि की चेतना का लोक की चेतना से साक्षात्कार ही काव्य रूप में अभिव्यक्ति पाता है। यह अभिव्यक्ति किसी भी भाषा एवं किसी भी विधा में हो सकती है। भाषा एवं विधा तो मात्र साधन है। चेतना के साक्षात्कार से संवेगों का विगलित होना एवं अपने प्रवाह में जनमानस को दोलायमान कर सहज ही पीड़ाओं को विश्रन्ति प्रदान करना ही काव्य का लक्ष्य है।

काव्य की कथा–विधा अपनी सरलता, सहजता एवं रोचकता से लोकजीवन के प्राण तत्त्व के रूप में विराजमान है। ऋग्वेद के आख्यानों से अद्यपर्यन्त कथासंसार लोकानुरंजन कर मानवमन को अनुशासित करता आया है। कैलाशनाथ द्विवेदी अर्वाचीन संस्कृत–हिन्दी साहित्य को अपनी सहज साहित्य सर्जना से विस्तार प्रदान कर रहे हैं। लोक–जीवन में स्वयं के संस्मरणों एवं अनुभवों ने ही 'जय–पराजय ' कथासंग्रह के रूप में परिणति पाई है। सभी कहानियों में ग्राम्य अंचल की माटी की खुशबु है, लोक संस्कृति की झलक है व सरल मनों की सहज अभिव्यक्ति है।

From the narrative of the Rigveda, the post-scriptural world has been disciplining Human mind and heart through literary creations, KailashNathDwivedi is extending Sanskrit and Hindi literature from his innate literature. His own memoirs and experiences in folk life have led to the defeat of Jai yaParajayKathaasangraha. All the stories have the fragrance of the soil of the rural region, the glimpse of folk culture, and the expression of simple minds.

Beyond the limits of time and space, the poet's consciousness is expressed in poetic form only by interviewing the public consciousness, this expression can be in any language and genre. Language and genre are only tools. The goal of poetry is to melt the emotions in the interview of consciousness and to relax the masses with ease by oscillating the masses in their flow. The narrative genre of poetry is enshrined as a vital element of folk life with its simplicity, ease and interestingness.

मुख्य शब्द : जनमङ्गल, मन्त्रद्रष्टा, विष्ठा, झिड़की, कदमबाज, कटिबद्ध, विरक्त, सक्त, सकाम, वाम, निराश्रया, लोकानुकीर्तन, जौहर, परिष्कृत, वंशीख, आभ्यन्तर, उफनाई, भाववैशिष्टय, कल्पनावैचित्र्यम्, शब्द–सौष्ठवम्, वनराजि, कंचनकामिनीकामी, निनादिनी।

Public-Welfare, Chanting, Dung, Rebuke, Stepmen, Determined, Spared, Attached, Desiror or Consent, Left or Opposite, Helpless, Happiness of People, Mass life immolation by Women, Refined, Internal, Ebullience, Emotional significance, Graphic significance, Word Elegance, Sequence of Forest, Desiror of beauty, Sonorous.

प्रस्तावना

साहित्य जनमंगल का साधक है। सृजन के भाव को स्फुट् रूप से अभिव्यक्त करने में समर्थ शब्द और शब्दों में निहित अर्थ के सुन्दर एवं जनमंगलकारी सामंजस्य को ही 'साहित्य' शब्द से अभिहित किया गया है। सत्य का साक्षात्कार करने वाले मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के मुखारविन्द से निसृत ऋचाओं के अवतरण से अद्यपर्यन्त संस्कृत साहित्य सरिता सतत रूप से प्रवाहमान है। सहज

प्रतिभा, ज्ञान विस्तार एवं अनवरत अभ्यास रूपी बीज से प्रस्फुटित कवि का कर्म काव्य के रूप में अवतरित होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

'जय–पराजय ' कथा संग्रह की समीक्षा एवं शोध का उद्देश्य समकालीन साहित्यकार की संवेदनाओं, समाज के प्रति उसके दृष्टिकोण एवं समाज के लिए उसके दिग्दर्शन को जनहृदय एवं साहित्य समाज के समक्ष रखना है। साहित्यकार के सृजन में लोककल्याण की खोज कर समाज के समक्ष रखना एवं कथा साहित्य के रूप में साहित्य के शिल्प, सौन्दर्य, शैली, कलापक्ष आदि का साहित्यिक अवदान के रूप में विवेचन करना शोधसमीक्षा का अवान्तर लक्ष्य है।

कवि की दृष्टि में समाज, उसका स्वरूप, उसकी समस्याएँ, उसकी पीड़ाएँ, उनके समाधान क्या हैं? उसकी व्याख्या कर साहित्यानुरागियों के समक्ष रखना भी इस शोध अथवा समीक्षा का उद्देश्य है।

अपारे काव्यसंसारेकविरेकः प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथा वै परिवर्तते।।[1]

साहित्य सर्जन की प्रक्रिया में वैदिक एवं पौराणिक आख्यानों में अपनी जड़ों को धारण करता हुआ कथासाहित्य न केवल भारत अपितु भारतेतर साहित्य पर भी अपना व्यापक प्रभाव रखता है। यद्यपि साहित्य की प्रत्येक विधा में कथा–तत्त्व मूल रूप से विराजमान रहता है, परन्तु शुद्ध कथा–विधा में कुछ अद्भुत ही आकर्षक है। सहजता, सरलता, रोचकता के साथ ही अपनी कौतुहलमयी शैली में जीवनमूल्यों को सहज ही हृदयंगम करवाने के कारणधार्मिक, सामाजिक, दार्शनिक, आर्थिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक जैसे गूढ़ विषयों के उपदेश हेतु कथायें एक लोकप्रिय माध्यम रही हैं।

विविध विधामय इस साहित्य संसार में कवि कैलाशनाथ द्विवेदी एक विशिष्ट स्थान धारण करते है।

जीवन अपराजित, ममता के बन्धन, कुसुमा×जलि, अभिनवचिन्तनम्, नाट्यामृतम्, काव्यमाला, शाकुन्तलीयम्, कथाकलिका, गुरुमाहात्म्यशतकम्, मृच्छकटिकपरिशीलनम्, कालिदास परिशीलन ऋग्वैदिक भूगोल, नाटककार हस्तिमल्ल, कालिदास एवं भवभूति के नारी पात्र, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक निबन्ध, साहित्य–संस्कृति चिन्तन, जय–पराजय, संस्कृत कवयित्रियों का व्यक्तित्व एवं कृर्तृत्व जैसी अनेकानेक कृतियों से साहित्य समाज के सुधीजनों को कृतार्थ किया है।

जीवन के उत्थान–पतन, हार–जीत, सम्पत्ति–विपत्ति, सुसंगतियों–विसंगतियों को अपने भीतर समेटे हुए, परिवेश में विकीर्ण संवेदनाओं के पुष्पों को लेखनी से ग्रंथाकार करते हुए, संसार–सागर में गहनता मे आलोड़न कर उद्धृत मंथन रत्नों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हुए 'जय–पराजय' नामक कथा संग्रह अपने इकत्तीस (31) कथा मुक्तकों से सामाजिक शिरोधार्यता को धारण करता हैं।

इस शोध पत्र में इन्हीं इकत्तीस कथा मुक्तकों के मूल्य को समाज के समक्ष रखने का पुनीत लक्ष्य मेरा है। साहित्यकार के साहित्य में उसका मानस, दृष्टिकोण, चिन्तन, ज्ञान, संवेदन एवं वैचारिक परिवेश परिलक्षित होता है। 'जय–पराजय' के कथासंसार में विचरण करते हुए मैंने प्रयास किया है कवि की भावभूमि को समझने की तथा मेरा उद्देश्य है साहित्य संसार को उस भाव बोध तक पहुचाना। मेरी लेखनी इस कर्म को कितनी सार्थकता प्रदान करेगी, उसमे तो सुधीजन ही निर्णय के पात्र है।

जीवन के किसी एक मौलिक संवेग अथवा मनोवैज्ञानिक सत्य को लेकर कथाकार अपनी कथा का ताना–बाना बुनता है। उस मौलिक संवेग को सामाजिक हृदय के अन्तःस्थल पर स्थापित करना ही कथाकार का उद्देश्य होता है। उस ताने–बाने को बुनने में उस मौलिक संवेगरूपी कथ्य के अतिरिक्त कथाओं के पात्र, उनके संवाद, कथाओं का परिवेश, कथा शैली सहायक होते है।

कैलाशनाथ द्विवेदी की जय–पराजय की कथाओं का कथ्य उनकी आत्मा है। कथासंग्रह की कथाओं का कथ्य लोकप्रसूत है। ज्यादातर कथाएं ग्रामीण परिवेश की सीधी–सादी जिन्दगी को प्रतिबिम्बित करती हुई कृषि प्रधान भारत की आत्मा से जुड़ी हुई है। अपने आस–पास के परिवेश में घट रही घटनाएं ही कथाकार के हृदय में उथल–पुथल मचाती है और यह उथल पुथल अथवा व्याकुलता कथाओं के रूप में विश्रान्ति को प्राप्त कर समाज को समाधान प्रदान करती है। जीवनमूल्यों की जिन शिक्षाओं को गूढ़ दार्शनिक शास्त्र जटिलता एवं क्लिष्टता के साथ विस्तार से प्रतिपादित करते हैं उन्हीं अनुकरणीय एवं आदर्श जीवन मूल्यों को कविवर अपनी सहज, सरल रोचक कथाओं से हठात् मानस पटल पर स्थायी रूप से अंकित कर मानव जीवन को श्रेष्ठता के स्तर तक ले जाने के मार्ग को प्रशस्त करते हैं।

कैलाशनाथ द्विवेदी की कहानियों का परिवेश प्रकृति की सुरम्य गोद में, सहज ग्राम्यभूमि में बसे समाज का है। जय–पराजय कहानी ठेठ गांव के अंचल में बसे धरमू–हरिया व धीरज की कहानी है। 'पतन का वरदान' गांव के चौधरी नानक व सेवक डगरू के सम्बन्धों का परिणाम है। फूटी ढोलक, तीर्थयात्रा, कांटे और फूल, वह ममताभरी संध्या, वे सफल विद्यार्थी अनागत, वादी का हित, अन्नदाता, वे कलपती आंखे जैसी ज्यादातर कहानयां भोले–भाले ग्रामीणों की सीधी–सादी जिंदगी की छोटी–छोटी समस्याओं में सिमटे जीवन को मूर्त रूप प्रदान करती है। ग्रामीण संध्या का साकार एवं जीवन्त चित्रण करते हुए कथाकार कहते हैं–

''अरुणाभामय अंशुमान अस्ताचलगामी था। सुहावनी सिन्दूरी संध्या अपना अनुराग और अरुणिमा पश्चिमी धूमिल गगन के क्षितिज पर बिखेर रही थी। गोधूलिवेला में गोकदम्ब धूल उड़ाता गाँव की ओर उन्मुख था, वहीं पंक्तिबद्ध पखेरु अपनी चोंचों में अन्न कण दबाये आकाश में उड़ते अपने नीड़ों की ओर बढ़े जा रहे थे। कृषक कंधे पर हल धरे हुए बैलों के साथ और उनकी गृहणियां सिर पर चारे का गट्ठा लादे अपने–अपने घरों की ओर उन्मुख थी।''[2]

गांव के उपेक्षित व गांव मुख्य धारा से कटे हुए तथाकथित नीचे के तबके के रहने के स्थान का वर्णन मन को खिन्न व दोलायमान करते हुए उस दृश्य को बरबस हमारी आंखों के सामने उपस्थित कर देता है–"गांव की गन्दी गलियाँ उस गाड़ी वाले मार्ग से जा मिलती जो बाहर बरगद के बगल से गुजरता था। वहीं वृद्ध नट की मार्ग से सटी बरगद की छाया में छोटी सी जीर्ण–शीर्ण झोपड़ी पड़ी थी। उस विशाल शरण्य वट ने वृद्ध की झोपड़ी के अतिरिक्त जैसे अपनी छत्रछाया में दुनियाभर की गन्दगी को भी स्थान दे दिया हो! सूखे झड़े पत्ते, सड़े मांस, भोगी गिद्धों और चीलों की गिरी विष्ठा, मरे पड़े गांव के जानवरों के अस्थि पंजरों से छूटी दुर्गन्ध ने जैसे आधुनिक क्षेत्र–विकास एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाओं को खुली चुनौती दे दी हो।.....बरगद के पास ही यह वृद्ध नट की झोपड़ी है, जो प्रायः धूप और मेह से मुंह मोड़ लेती है।"[3]

गांव की पगडंडियों का वर्णन करते हुए कथाकार कहते हैं–"मैं जब कभी गाँव के बाहर बल खाती वक्र पगडंडियों से परिभ्रमण करता हुआ जगतपाल के खेतों की ओर निकल जाता तो उसकी फसल को देखकर मेरे मन–प्राण पुलकित हो उठते।"[4]

कथाकार की कहानियों में ग्राम्य परिवेश सजीव रूप में रूपायित होता है, जो उनकी कथावस्तु को बल प्रदान करता है। कहानियों के पात्र एवं संवादों में कथाकार का चिन्तन, दर्शन एवं संवेदन परिलक्षित होता है। उनके पात्र जमीन से जुड़े हुए, निर्विकार निर्दोष, निराडम्बर एवं निश्छल है। पात्रों के भाव एवं संवाद सादगी एवं सहजता लिए हुए हैं। काजल की डिबिया के नायक दलपति की सादगी का उदारहण दृष्टव्य है– 'चलने में आगे रहने से गाँव के लोगों ने उसे 'चालबाज' उपाधि दे दी है। जिसे सुनकर वह क्रोधित हो उठता लेकिन जब कोई बड़े प्यार से कहता–'कहो गुरु! चालबाज कुछ खाया है कि नहीं?' तो वह मुस्करा देता और मीठी झिड़की सुनाता। "यार तुम्हे समझ नहीं, तुम्हारी देखा–देखी और लोग भी कहा करते है। ऐसा न कहा करो, यह शब्द बुरा अर्थ लिए है।' तो कैसा शब्द अच्छा अर्थ लिए?" 'कोई शब्द नहीं; अपना काम देखा। नहीं दोस्त, बताओं तो सही।' जब बहुत आग्रह किया जाता तो वह मुस्करा कर कहता "कदमबाज कहा करो"।[5]नगर के आक्रोश, अहंकार एवं आडम्बर से दूर संवादों में कितनी सहजता एवं सरलता है।

कथाकार के पात्र हमारे समाज में, हमारे आस–पास विचरण कर रहे, सामाजिक विसंगतियों को सुसंगतियों में बदलने की जगत में लगे लोकप्रसूत सामान्य प्राणी है। कथाओं के पात्र काल्पनिक नहीं है, वे वास्तविक धरातल पर चलते फिरते सामान्यजन है। कहानियों को पढ़ते हुए वे कभी असम्भव आदर्श प्रतीत नहीं होते। हमें लगता है कि हम जय–पराजय के पात्रों से रोज रूबरू होते है। जिन घटनाओं को कथाकार ने कहानियों का विषय बनाया है वे समाज की दैनिक घटनाएँ है जिनसे हम रोज दो–चार होते रहते हैं।

जय पराजय का हरिया शोषित, दलित, ग्रामीण समाज के असंख्य किसानों का प्रतिनिधित्व करता है जो 'धरम' जैसे सम्पन्न किसानों से शोषित होते रहते हैं। ममत्व से वंचित समाज के सच्चे समर्पित सेवक, परन्तु अंततोगत्वा परिस्थिति से पराजित अनेक दलपति समाज में देखने को मिल जाते है। मंगल जैसे, मंगलकारी सज्जन भी समाज में सौभाग्य से मिल ही जाते हैं। संयम तोड़ते मुस्कान के लुटेरे संन्यासी भी सामाजिक घटनाओं के किस्सो में यदा–कदा सुनाई देते रहते हैं। स्वार्थ की बलि चढ़ती श्यामा जैसी परित्यक्ताएं समाज में आम बात हो चली है। सांसारिक संघर्षों से पलायन करते रायसिंह जैसे साधु समाज में समाये रहते हैं, जिनका रहस्योदघाटन कई बार देखने को मिल जाता है। कथाकार ने जूते व छाते को भी कथा पात्रों के रूप में परिणमित कर दिया है, जिनके संवाद मानवीय संघर्षों एवं कुण्ठाओं को उजागर करते है। कक्ष के बाहर उपेक्षित धूल–धूसरित जूता, खूंटी पर टंगे छाते की दर्प युक्त मुस्कान को सहन न कर पाते हुए कहता है–"अरे मूढ़ ओछे व्यक्ति ही दूसरे के अपमान को उपहास का विषय ही मानते हैं। महान सदैव सहानुभूति से अपमानित हृदय को सान्त्वना देते हैं। कोई भी किसी का, चाहे वह कितना ही गुरुतम या लघुतम क्यों न हो, अपमान कर सुख से नहीं बैठ सकता।"

'कर्तव्य की बेदी' पर तथा 'अनुरोध' जैसी कथाओं के पात्र एवं विषयवस्तु ऐतिहासिक है जबकि तत्त्वज्ञानी, विभ्रम व वे बढ़ते चरण जैसी कहानियां दार्शनिक गूढ़ तात्त्विक चिन्तन पर आधारित है।अधिकतर कथाएं वर्णनात्मक शैली की कथाएं है जो जीवनदर्शन के मौलिक संवेगों का ही विस्तार है।

साहित्य सहृदयहृदय साहित्यकार के हृदय की संवेदना है, उसके मन की पीड़ा है, जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण है, कवि का आत्मबोध व आत्मावलोकन है, समय एवं काल से परे हृदयों की एकाकारता है। इसी पीड़ा एवं संवेदना को अनुभूति का विषय बनाते हुए उसे समाधान की दिशा देना ही कवि का उद्देश्य होता है। साहित्य के कान्तासम्मित उपदेश के उद्देश्य को प्राप्त करने में कथाकार सफल रहे है। भारतीय जीवनमूल्यों एवं भारतीय संस्कृति की रक्षा एवं देश के भविष्य का पथ प्रशस्त करना भी कथाकार का लक्ष्य है। कविवर अभिराज राजेन्द्र मिश्र अपने कथासंग्रह राङ्गडा की प्राग्वाक् में कहते हैं–"कविता में कवि स्वयं अभिव्यक्त होता है, परन्तु कथा में सम्पूर्ण, समाज, राष्ट्र अथवा विश्व।"[6 ब]

कथाकार कैलाशनाथ द्विवेदी की कथाओं का उद्देश्य समाज की सुसंगतियों एवं विसंगतियों को वर्णनीय विषय बनाए बनाते हुए जीवन मूल्यों को समाज में समारोपित करते हुए नए समन्वयशील सुसंगत समाज की रचना करना है।

शोषण करने वाले नानक चौधरी को सबक सिखाने वाला डगरू मानो पूरे समाज को सबक सिखाना चाहता है–"जेवर पैसा पोटली में समेट मुँह अंधेरे ही बाहर नौ दो ग्यारह हो गया, वह चौधरी नानक को ही नही वरन् सम्पूर्ण स्वार्थी समाज को दिखा देना चाहता था कि श्रम से सेवा करने वाले, दुःखी दरिद्र दलितों का पेट काटने वाले शोषक समृद्ध स्वामियों से ये सेवकजन कैसे निपटते हैं? शायद इस घटना से सबक सीख धनिक

स्वामी अपने सेवको का पेट न काटकर शोषण नहीं कर संवेदनशील और उदार हो सकेंगे।"[7]

समय की परिवर्तनशीलता पर धरमू के मुख से कथाकार कहलवाते हैं–"बाबू, समय का फेर है। अब वा बात कहाँ जो पहले देखत रहे? अब जब बांहे शिथिल भयी, तब मालिक की नजर फिर गई। हमाये पुरानी संगी धौरा ने भी अब जवाब दे दयो है।"[8]

सरस एवं रोचक कहानियों से कथाकर दर्शन के गूढ ऊहापोह भरे तथ्यों की अपेक्षा सहज रूप से जीवन के परम सत्य से समाज का साक्षात्कार करवाना चाहते हैं। 'वे बढ़ते चरण', 'भौतिकता की सीमा', अनुरोध, जीवन की सार्थकता, विभ्रम, दृष्टिवैषम्य एवं विभ्रम जैसी कहानियां सृष्टि के रहस्यों को कथा तत्त्व के रूप में उद्घाटित करती है। भौतिकता की पराकाष्ठा से व्याकुल पुरुष की अकुलाहट दर्शनीय है–"जन्म–मरण की लघु सीमा में पृथ्वी पर पड़े पेट भरने वाले पुरुष की दयनीय दशा देख भौतिकता की विराट सीमा को पाकर वह बौखला उठा। आदि आध्यात्मिक पूर्वजों का ही तो वह अभिन्न अंश था। उस मनीषी परोपकारी पुरुष ने सोचा कि इस सभ्य कहे जाने वाले समाज में झूमती मदमाती भौतिकता को आध्यात्मिकता के बन्धन से बांधा जाए। बस इसी चिन्तनाधार पर उस विवेकी को उसी दिन से साधना मार्ग सूझा और संयम को समेट कर कर्मयोग से लक्ष्य प्राप्त करने के लिए संसार से कटिबद्ध होकर निकल पड़ा।"[9]

राय सिंह को सांसारिक माया मोह के यथार्थ से परिचित करवाने के लिए सोमनाथ के मुख से कथाकार ने भर्तृहरि के मार्मिक अनुभव को कहलवाया है–

"जिसको मैं सोचता निरन्तर वह तो है मुझसे विरक्त,
जिस जन को वह चाहती, वह तो दिखे कहीं अन्यत्र सक्त।
कान्ता कोई मेरे लिए सूखती सन्तापित होकर सकाम,
उस नारी, उस नर संग मुझे धिक्कार अरे धिक्काम वाम।।"[10]

सांसारिक माया जाल में आसक्त साहू सम्पत्तिमल एवं साधना सन्मार्ग के सच्चे सेवक संन्यासी दो समानान्तर विचारधाराएं जीवन के यथार्थ सत्य एवं मिथ्या आवरण को उद्घाटित करती है। दीर्घ समाधि एवं साधना के उपरान्त सत्य के निकट संन्यासी सोच रहा है–"संसार यह माया या भ्रम के स्थल का नाम है। बड़े–बड़े योगी–यती, सिद्ध–साधक, विवेकी–विज्ञानी, सुर–असुर, यांत्रिक–तांत्रिक अपने चरण इस भ्रमस्थली पर पूर्णतः रोप न पाये। माया–मोह, लोभ के बवण्डर चक्र को तीव्रतर करती रहती है तथा मानव प्रकृति निराश्रया सी भटका करती है।"[11]

कथाकार ने अपनी कथाओं के माध्यम, सामाजिक विसंगतियों को सुसंगतियों में परिणमित करने का सफल प्रयास किया है। समाज को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक धरातल पर सही दिशा में सही तरीके से चलने का मार्ग प्रशस्त करने का पुनीत लक्ष्य साधा है कविवर ने। अपनी कहानियों को 'अपराजित जीवन की जिजीविषा' के रूप में परिभाषित करते हुए कथाकार अपने श्रद्धासुमन समर्पण में कहते हैं–''अपराजित जीवन की जिजीविषा लिए लोरियों के साथ सरस लोक कथाएँ.....परिवारीजनों को अमन्द आनन्द से सुनाने वानी स्वर्गीया माँ।"[12]

कथाकार की कथाएँ परिवार में संस्कारों की सीखों को समरोपित करती माँ की स्नेहपूर्ण सरस कथाएँ हैं।कैलाशनाथ द्विवेदी की कथाएँ कथाकार की अन्तश्चेतना का लोक की अन्तश्चेतना से साक्षात्कार है। उनकी कथाओं में लोक, लोक की पीड़ाएँ, संवेदनाएं, समस्याएं, अनुकूलताएं व प्रतिकूलताएं प्रतिबिम्बित होती है। लोक–चेतना उनकी कथाओं का आधार स्तम्भ है। वस्तुतः लोकचेतना एवं लोकानुरंजन ही साहित्य का प्राण है। इसी ओर इंगित करते हुए डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी अपने अभिनव काव्यशास्त्रीय ग्रंथ अभिनवकाव्यालंकार में कहते हैं–

"लोकानुकीर्तन काव्यम्।"[13]

सामाजिक परिवेश के प्रति सूक्ष्मसकरुण संवेदनशीलता आदर्श मानव समाज की संरचना की आधारशिला है। कैलाशनाथ द्विवेदी का सम्पूर्ण कथासांर लोकचेतनामय है। दृश्यमान चराचर जगत के प्रति ज्ञान, संज्ञा, बोध, समझ, प्रज्ञा, बुद्धिमत्ता, विचार–विमर्श, संवेदनशीलता, सजगता एवं सजीवता को ही समष्टि रूप में लोकचेतना कहा जा सकता है। जय–पराजय कथासंग्रह की जय–पराजय , पतन का वरदान, काजल की डिबिया, तीर्थयात्रा, फूटी ढोलक, कांटे और फूल, अन्नदाता जैसी कहानियां प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक शोषण, असमानता, आडम्बर, ऊँच–नीच, जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता, जमींदारों के अन्यायपूर्ण दृष्टिकोण को प्रकट करती हुई समाज को सोचने पर विवश करती है। कथाकार कहते हैं– समाज में समृद्धजनों से सदा शोषित होते रहते हैं– दलित–दीन सेवकजन। सेवक चाहे जितना जी–जान से श्रमपूर्वक अपने स्वामी की सेवा करे, किन्तु निष्ठुर स्वामी सेवक का शोषण करता ही रहता है। बेचारा डगरु भी नहीं बच पाया क्रूर कृपण चौधरी नानक चन्द की शोषण प्रकृति से।"[14]

आर्थिक विषमता में शोषण के बीज समाहित होते है। कथाकार की कथाएँ सामाजिक शोषण के ब्याज से आर्थिक ऊँच–नीच के विरुद्ध अपनी आवाज उठा रहे हैं, फूटी ढोलक, अनागत, अन्धा रास्ता जैसी कथाएँ आर्थिक चेतना के प्रति प्रेरित करती कहानियां है। पलायनवाद के पीछे आजीविका ही प्रेरक होती है। तीर्थयात्रा में इसी पहलू को उजागर करते हुए कथाकार कहते हैं–"जब इस गाँव में गुजारा न होगा तब निकल पड़ेंगे बाहर नौकरी करने। पेट सब कुछ कराता है। अपना घर अभागा ही छोड़ता है। कितने वे सुखी हैं जो चन्ददाने जुटा संतोष से अपने घर में रहकर ठंडा पानी पी प्रेम से हंस–हंस जिन्दगी बिताते हैं।"[15]

सामाजिक एवं आर्थिक शोषण के खिलाफ राजनीतिक उदासीनता पर प्रहार करते हुए तीर्थयात्रा में राम कहता है–"हमें क्या? अपना काम करे। हमें तो पसीना बहाना है। खून सुखाना है, श्रम करना है। वहाँ आराम हराम है, फिर भी ऐसे शासन में यदि भरपेट रोटी नहीं मिलती तो ऐसी सरकार को धिक्कार है।"[16]

तिलका की प्रार्थनाओं में राष्ट्रभक्ति के प्रति जज्बा एवं जुनून देखते ही बनता है–"माता गंगे? अगर

कर्त्तव्य पूरा कर सकी तो ठीक, नहीं तो कालिमा छाने के पहले मुझे अपनी गोद में स्थान देना। मुझे अब चिता के जौहर की जरुरत नहीं है मुझे तो केसरिया नर बाना धारण कर समर जौहर की जरुरत है।"[17]

कैलाशनाथ द्विवेदी का कथाओं का लक्ष्य एक सुंदर, स्वस्थ, निर्विकार, निर्दोष, सुखी व संतुलित समाज की रचना का पथ प्रशस्त करना है। पथभ्रष्ट युवा पीढ़ी को सत्प्रयासों एवं सत्संगति से उचित दिशा का समाधान देती परिष्कार कथा इसका सुन्दर उदाहरण है। कवि कहते हैं कि ''माधव जैसे सन्मित्र के प्रयासों के परिणामस्वरूप "परिष्कृत प्रवृत्ति से गौरीशंकर के दोनों सुयोग्य सुपुत्रों ने अपने गाँव को गौरवशिखर पर पहुँचाकर सत्संस्कारों से गर्वोन्नत कर दिया है। आजकल इन माधव, गम्भीर, प्रकाश से आस–पास गाँवों में भी पथभ्रष्ट युवक परिष्कार प्राप्त कर परम परितोष एवं प्रसन्नता का अनुभव करते है।"[18]

'वे सफल विद्यार्थी' कहानी से प्रकृति की गोद में अनौपचारिक, सहज, स्वाभाविक शिक्षा की आदर्श परिकल्पना करके युवा पीढ़ी को शिक्षा के क्षेत्र में 'व्यर्थ' के तनाव व भार से मुक्ति का सन्देश देते हैं। 'जीवन की सार्थकता' में कर्म की महत्ता प्रतिपादित कर स्वस्थ समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करते है। 'नेता या अभिनेता' तथा वादी का हित जैसी कहानियां समाज के दोहरे चरित्र पर प्रहार करती है।

निश्चय ही कथाकार सामाजिक विसंगतियों का परिष्कार कर जनमंगल को साधने में सफल रहे है। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, नीति, धर्म, अध्यात्म, दर्शन, मनोविज्ञान, इतिहास, राजनीति सभी क्षेत्रों मानव मात्र को सावचेत करने तथा लोकानुकीर्तन जैसा पुनीत लक्ष्य साधने में कथाकर सशक्त रूप से सफल सिद्ध हुए है।

सत्यार्थ से लोककल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाला साहित्यकार संसार का पथ प्रदर्शक होता है, शिक्षक होता है, समीक्षक होता है। सहज काव्य प्रतिभा के साथ ही वह विविधविषयपारंगत, संवेदनशील, मनोवेत्ता, काव्यसौष्ठवनिष्णात एवं अन्तर्दृष्टि समन्वित होता है। वह अपनी दृष्टि एवं काव्यसृष्टि से जनसमाज एवं साहित्य समाज दोनों का परिष्कार करता है। कवि के भावसौन्दर्य को सार्थकता प्रदान करने में शिल्पसौन्दर्य एक सशक्त सूत्रधार की भूमिका निभाता है। साहित्यकार के शब्द, वाक्यसंरचना, अलंकार, भाव व शैली अर्थबोध की पूरक होती है।

कथाकार की भाषा शैली लोकानुरंजक शैली है। कहावतों, मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों एवं क्षेत्रीयता के पुट से ग्रथित शैली अधिकतर वर्णनात्मक है। प्रकृति चित्रण में यह वर्णनात्मकता विशिष्ट रूप से परिलक्षित होती है। स्वर्गिक सौन्दर्यमयी स्थली में समाधि में अवस्थित होने के प्रयास में असफल होने के दृश्य का वर्णन करते हुए कथाकार कहते हैं–"आश्चर्य! स्वर्गिक सौन्दर्यमयी स्थली में भी समाधि का सहज अभ्यासी संन्यासी अधिक क्षण ध्यानावस्थित न रह सका। यद्यपि उसने निर्झरों की इन्द्रधनुषी धाराओं की ध्वनि को विहंगमों के कल कूजन एवं कीचकों से वायु द्वारा उत्पन्न सुन्दर वंशीख को अनेक बार सुना था। इस प्राकृतिक संगीत स्रोतों से उस वीतराग के कर्णरन्ध्र अपना पूर्ण समझौता कर चुके थे। उसकी ध्यान मुद्रा स्वभावतः स्वनियन्त्रण प्राप्त कर चिन्तन श्रृंखला को भी अविच्छिन्न बनाये रखती किन्तु सघनवनाली से झांकती गिरिमाला के नीरव प्रदेश से उसे एक अतर्क्य अव्यक्त और अमन्द स्वर ने उस आत्मनिग्रही धीरमना, संन्यासी के आभ्यन्तर को झकझोर ही डाला।"[19]

भाषा में आंचलिक संवादों को पिरोने से आंचलिकता झलकती है। पात्रों के संवाद उन्हीं की शैली में उद्धृत किए गये हैं–"बाबू यह एक जोड़ी बटेश्वर के मेला से हमई ने पसन्द कर लिवाई थी। सीधे हाथ ओर यो धौरा तबही को है। दस माटी चलो दांतन जरुर एक गिर गओ है, पर पानी तो वैसोई है। यामे हमाये प्रान बसत है। अब तो मालिक के हिंया हमाई ममता याही सो अटकी है।"[20 अ]

जीवन के अनुभवों की निचोड़, जीवन मूल्यों के समारोपण की आधारशिला स्वरूप कहावते, लोकोक्तियां एवं सूक्तियां कथाकार की शैली में प्रभाव बढ़ा रही है–'चने के साथ घुन पिस जाता है', नौ दो ग्यारह हो गया, पानी पीना छानकर, रिश्ता करना जानकर, काजल की कोठरी में केतू हू सयानो जाय, एक लेख काजल की 'लागि है पै लागि है', 'उफनाई हाडी स्वयं ही चौराहे पर फूटती है, जहां–जहां भाग्यहीन व्यक्ति जाता है, वहाँ–वहाँ विपत्तियाँ खड़ी हो जाती है। 'मरी खाल की सांस सों सार भसम हुय जाय', जैसे वाक्य गागर में सागर करने का कार्य कर रहे है।कथाकार की भाषा शैली कथा के परिवेश, पात्रों, कथावस्तु, संवादों को बल प्रदान कर रही है।

साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान रखने वाले कैलाशनाथ द्विवेदी के कथा साहित्य के भावसौन्दर्य को परिपुष्ट करने वाले शिल्प सौन्दर्य की समीक्षा किए बिना उनके साहित्यिक अवदान का मूल्यांकन संभव नहीं है। वस्तुतः काव्य की विधा कोई भी हो, काव्य आनन्दानुभूति का कारक है तथा आनन्दानुभूति रसास्वादनमूलक है, इसी ओर संकेत करते हुए मम्मट काव्य प्रयोजन के अंतिम परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य के रूप में 'सद्यपरनिवृत्तये' कहते है। पद्यकाव्य की अपेक्षा गद्यकाव्य कवि के कवित्व की श्रेयस्कर कसौटी है, इसी ओर संकेत करते हुए कपिलदेव द्विवेदी कहते हैं–

"भाववैशिष्ट्यं, कल्पनावैचित्र्यं, प्रौढ़ा प्रांजला शैली, सरसं वस्तु, वक्रोक्तिप्रधाना भणितिः, शब्द–सौष्ठवम्, भावसौन्दर्यम्, अभिव्यक्तेः रम्यत्वं च गद्यकाव्ये सहृदयहृदयाह्लादकारित्व लोकोपसेव्यत्वं च गुणं प्रथयति। एतद् ध्यायं ध्यायं कविभिरिदमुदीर्यते यद् 'गद्यं कविनां निकषं वदन्ति।'"[20 ब]

कैलाशनाथ द्विवेदी के कथा साहित्य में प्रसंगानुसार सभी रसों की उपस्थिति है, परन्तु मुझे प्रतीत होता है कि मानव मात्र की पीड़ा से एकाकार होते, सहृदयहृदय, संवेदनशील साहित्यकार में करुण रस ही केन्द्रीय भाव है जिस ओर 'एको रसः करुण एव' के रूप में भवभूति का संकेत है। 'फूटी ढोलक' कहानी में आजीविका के एक मात्र साधन ढोलक के फूट जाने पर वृद्ध की करुणावस्था का वर्णन करते हुए कथाकार कहते हैं–"वृद्ध अनागत आपत्ति, भय और चिन्ता के भार से

लड़खड़ाता चल पड़ा अपनी झोपड़ी की ओर। आज उसके चारों ओर के घर घूम रहे थे। उसे कुछ भी पहचान में नहीं आ रहा था क्योंकि उसकी आंखे आंसूओं से भरी थी, सिर चकरा रहा था और कानों में सन्न–सन्न सा शब्द और आकुल कर रहा था।"[21]

गर्दभी की मृत शिशु के प्रति ममताभरी निरीहता देखकर कवि को लगता है कि इस पशु संवेदना के आगे मानवीय संवेदनाएं भी पराभूत हो गई है–"एक क्षुद्र पशु जाति की गर्दभी ने अपने अद्भुत मातृत्व एवं ममत्व में एक मानवी को भी पराभूत कर दिया था।"[22]

धरमू एवं धौरा की वृद्धावस्था की असहायावस्था का वर्णन दर्शनीय है–"जो धौरा मीलों तूफानी चाल से दौड़ा, जिसने मनो भारपूर्ण गाड़ियां खींची.....वही धौरा उस दिन जीवन की सावसाद संध्या में अपने असहाय साथी के साथ सिर झुकाए अपने स्वामी का सुखमय संसार छोड़कर हिलता चला जा रहा था।"[23]

केन्द्र में करुण होते हुए भी यथा अवसर अन्य रसों की उपस्थिति भी है। परित्यक्ता की श्यामा कहारिन के पत्र में वियोग श्रृंगार की झलक देखिए–

"इस जीवन में तुम्हारे बिना अन्धेरा ही अन्धेरा है। निपट निराशा के बन्धन मुझे जड़ बना देते हैं।"[24]

बोधा की वाणी में वीर रस की अनुभूति है– 'अपनी तिलभर धरती पर बोटी–बोटी से लहू बहाना, बहू–बेटियों का जलती ज्वाला में हँसते–हँसते शरीर जलना यह राजपूत जाति ने ही सीखा है।'[25]

जीवन के अस्तित्व का बचाये रखने का संघर्ष कैसा वीभत्स दृश्य उपस्थित कर देता है, देखिए–''काले–कलूटे नंग धढ़ंग अस्थि–पिंजर–शेष–शरीर वाले इनके लड़के भी वहीं कूड़ा करकट के ढेर को टाल–टाल कर मतलब की वस्तुएँ–कोयले के टुकड़े, कागज आदि ढूंढते दिखाई दे जाते हैं।''[26]

कहानी के मौलिक संवेग को सार्थकता प्रदान करती औचित्यानुसार सभी रसों की स्थिति जय–पराजय में दिखाई पड़ती है।साहित्य में रस जहाँ आत्मा के उपकारक होते हैं वहीं प्रकारान्तर से अलंकार भी शरीर के शोभाकारक होते हुए भी आत्मा के ही कारक होते है। काव्यप्रकाशकार इसी तथ्य को कहते हैं–"उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽ›द्वारेण जातुचित्।"[27]

'जय–पराजय' कथासंग्रह को पढ़ते हुए मैंने पाया कि कथाकार कैलाशनाथ द्विवेदी जी ने अपनी काव्या›ना को भरपूर अलंकृत करने का सार्थक प्रयास किया है। मुख्य रूप से उनकी शैली वर्णनात्मक होने के साथ अनुप्रासात्मक भी है। कवि की शब्दावली प्रत्यक्षर अनुप्रासात्मक प्रतीत होती है, परन्तु अन्य अलंकार भी बीच–बीच में उनकी कथाओं को सशक्त एवं सार्थक करने में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

"समीप वनराजि से सटकर बहने वाली सलिलधारा से शब्दायमान सरिता" 'अरुणार्क की अरुणिम आभा से एकाकार, तटिनी पर तैरती तरणी, पराशर प्रातःकालीन प्रकृति के पावन परिवेश में पधारे, कलकल निनादिनी कालिन्दी, कंचनकामिनीकामी ये क्रूर कामीजन, अस्तालचलगामी अंशुमान की अरुणिमा.....'' आदि असंख्य उदाहरण कथाओं में नभोमण्डलरूपी चुनरी में पिनद्ध सितारों की तरह सुंदर स्वरूप में सुसज्जित है।

भाषा में उपमाएँ भी शैली को समृद्ध करने में सहायक ही हो रही है। 'कीलों जैसे दांत', 'चिमनियों का धुंआ कलियुगीक्रूर शैतान के कल्मष निश्वास सा','धूम भाग्यलेखा सा आकाश पत्रिका पर', 'वसन्त संखा कुसमायुध की लचीली चापयष्टि सी कमनीय' जैसी अनेकों उपमाएँ कथाओं में गुंथी हुई है।

यथाप्रसंग अन्य अलंकार भी कथाकामिनी को सार्थकता दे रहे है। उत्प्रेक्षा देखिए–"आकाश में टिमटिमाते तारे एवं नक्षत्र जैसे जीवन की नश्वरता का बोध कराते हुए मूक अनुरोध कर रहे हो।"[28]

कथाकार रूपक में अपनी बात कह रहे है–"घर पर तब तक मार्ग से माधव की मतलब भरी उक्ति–कुदाल से दोनों की नशे की दुर्गुण रूपी जड़े उखड़ चुकी थी।"[29 अ]

कमोबेश सभी अलंकार कथाओं के आन्तरिक एवं बाह्य सौन्दर्य को संवर्धित कर रहे हैं।प्रकृति की सहज–सुरम्य अंचल में जीवन की अनुभूतियों को अभिव्यक्तियां देते कथाकार कैलाशनाथ द्विवेदी जी ने यथा अवसर प्रकृति का ऐसा स्वाभाविक शब्द चित्र उकेरा है कि कथाओं की प्राकृतिक पृष्ठभूमि साक्षात् अक्षिगोचर सी प्रतीत होती है। शब्द स्वरूप में मूर्तिमान दृश्य हमें अपने भीतर समेट लेता है और हम साक्षात दृश्य के साथ एकाकार होकर परमशक्तिमान की कृति इस प्रकृति के आनन्द से सरोबार हो उठते है। कथाओं के नैतिक एवं जीवन मूल्यों को उन्होंने प्रकृति के विविध रूपों जैसे मरुस्थल में उड़ता पक्षी, चिता के प्रति आतुर पशु–पक्षी, तापत्राण स्वरूप जूता–छाता, पक्षी को आश्वस्त करता ठूंठ, धरमू व हरिया के खेत, धरमू का धौरा, प्रकृति की गोद के सफल विद्यार्थी तथा लालू की कलपती आंखे सबके सब जीवन के पाठ पढ़ाते हुए कथाओं में विराजमान है।

मां के ममतामयय घेरें से वंचित शैला को जिस प्रकृति मां ने शरण दी है उस प्रकृति के असीम आंगन का वर्णन कथाकार के शब्दों में उदाहरणीय है–"वनों के वृक्षों के सामयिक सुन्दर–सुन्दर वेष, हरितपादप पुष्पों पर मधुकरियों की मंजु गुंजन–ध्वनि, सघन शाखाओं पर प्रफुल्ल पक्षिकुल के कलनाद के साथ ही नदी–नद निर्झरों की धारा का मनोमुग्धकारी संगीतमय रव आदि प्रकृति के अनेक आनन्ददायक उपादान उसकी मन्द मुसकान को अव्याज रूप देते रहते। वह प्रकृति–प्रांगण में स्वच्छन्द सौन्दर्य की देवी–सी घूमती भव्य–भावों में बहती, सौन्दर्य रस का पान करती। उसके पर्वतीय ग्राम में उसके इस स्वेच्छापूर्ण विचरण पर जन–जिह्वायें प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष रूप में दुराचरण सम्बन्धी आलापों का विष उगलने लगीं।"[29ब] वृक्षों के झुरमुट से झांकते सूरज का वर्णन कितना सुन्दर बन पड़ा है–"दूरवर्ती गंगा पार श्यामल विटपमाला की झुरमुट से झांकता रविबिम्ब संध्या सुन्दरी के सिन्दूर सा प्रतीत हो रहा था।"[30]

किसी भी काव्य की उपादेयता एवं प्रासंगिकता ही उसके सार्थक एवं चिरंजीवी होने का सूत्र है। कवि की काव्यसृष्टि में जो अप्रासंगिक हो चुका है, उसे छोड़ना ही होता है तथा जो प्रासंगिक है, उसे धारण करना ही होता

है। कैलाशनाथ द्विवेदी जी का साहित्य युगीन परिस्थितियों से उत्पन्न एवं युगानुकूल है। भौतिकता की अंधी दौड़ में तथाकथित प्रगति के पथ पर अग्रसर परन्तु किंकर्तव्यविमुढ़, अशान्तचित्त, एकाकी, जीवनमूल्यों, नैतिक मूल्यों, दादी–नानी की परवरिश, संयुक्त परिवार के सहिष्णुता, सामंजस्य, सहजता एवं सादगी से बहुत–दूर नई–पीढ़ी के लिए जीवन मूल्यों की सीख देती 'जय–पराजय', परिष्कार, भौतिकता की सीमा, वे सफल विद्यार्थी, मुहूर्त, जीवन की सार्थकता, वीरबाला, पथिक के साथी, जीवन अपराजित, दृष्टिवैषम्य, वे कलपती आंखे जैसी कहानियां सर्वथा प्रासंगिक सिद्ध होते हुए दादी–नानी का कहानियों की तरह संस्कार–समारोपण को सार्थकता प्रदान कर रही है। कथाकार की कुछ कहानियाँ प्रकृति की गोद में बसे गाँवों के संघर्षपूर्ण जीवन की झलक प्रदान करती हुई हमारी नई–पीढ़ी को संघर्षों की परिभाषा सिखाती हुई 'प्रकृति' के प्रति कृतज्ञता के भाव को जाग्रत करती है। पतन का वरदान, काजल की डिबिया, तीर्थयात्रा, फूटी ढोलक, वह ममताभरी संध्या जैसी कहानियाँ ग्रामीण संघर्ष की प्रतिनिधि कहानियाँ है। टकराता मातृत्व, जीवन–अपराजित, वे कलपती आंखे जैसी कथाएँ सर्वाधिक निस्वार्थ, सहज स्नेह से भरपूर, निष्ठा–स्वामिभक्ति से पूर्ण शुद्ध प्रेम के प्रतीक पशु–पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

समाज के दोहरे चरित्र को प्रकट करती 'वादी का हित', नेता या अभिनेता दृष्टिवैषम्य जैसी कहानियाँ समाज को दर्पण दिखाने का कार्य करती है।

मुस्कान का लुटेरा, भौतिकता की सीमा, अनुरोध, अनागत, विभ्रम, तत्त्वज्ञानी जैसी कहानियां सांसारिक समाज एवं वीतरागी समाज की कड़ियां जोड़ते हुए एक–दूसरे के प्रति दृष्टिकोण एवं संक्रमण को सहज रूप से वर्णित करते हुए दोनों समाजों को समझने में मदद करता है।

साहित्यवलोकन

संस्कृत एवं हिन्दी वाङ्मय को विस्तार प्रदान करने वाले डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी का कथा संग्रह 'जय–पराजय' एक स्तरीय कहानी संकलन है। यद्यपि कथाओं के सृजन एवं शोधनका एक सुदीर्घ इतिहास है। वैदिक वाङ्मय से अद्यपर्यन्त सृजितकथाएँ किसी भी कथा संग्रह की समीक्षा के लिए मानसिक भावभूमि निर्माण में महती भूमिका निभाती है। जहाँ तक जय–पराजय कासम्बन्ध है। यह एक सर्वथानूतन कथा संग्रह है जिस पर शोध एवं समीक्षा के इस पत्र से पूर्व दो शोध–पत्र लिखे जा चुके हैं जो निम्न प्रकार है–

1. जय–पराजय – एक विहंगावलोकन, डॉ. शिवशंकर मिश्र समीक्षा लोक, सरस प्रकाशन, जयपुर
2. कैलाशनाथ द्विवेदी की किस्सागोई : एक नजर, डॉ. जयशंकर तिवारी, समीक्षालोक, सरसप्रकाशन, जयपुर

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि एक जिम्मेदार साहित्यकार के धर्म का निर्वाह डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी जी ने संवेदनशीलता एवं समर्पण के साथ किया है। उन्होंने कथाओं में समाज का विशेषतः प्रकृति मां के आँचल में विराजमान ग्राम्य समाज का यथार्थ चित्र उकेरते हुए अपनी कथाओं के माध्यम से समाधान का मार्ग भी दिखाया है, जनमानस को दोलायमान किया है, सहृदय समाज को वैचारिक गतिशीलता दी है, हृदय वीणा को झंकृत किया है तथा अनुकरणीय मार्ग का उपदेश भी दिया है। समसामयिक समाज को कथावस्तु के मौलिक संवेग के रूप में चयन किया है। यद्यपि शहरी समाज में प्रतिदिन अनेकानेक समस्याओं से जूझते नवीन समाज के गिरते नैतिक–मूल्यों अवसाद, एकाकीपन, स्त्री सशक्तीकरण, तनाव, शैक्षिक प्रतिस्पर्धा, टूटते सम्बन्धों एवं मनोवैज्ञानिक उलझने कविवर के कथासंसार में प्रविष्ट नहीं हो पाई है परन्तु चूंकि कथाकार की लेखनी सतत् प्रवाहशील है अतः आशा है कि इन विषयों पर भी अपनी कहानियाँ सहृदयहृदय सुधी साहित्य–समाज को सौंप कर कृतार्थ करेंगे तथा नवीन उभरती मानवीय प्रवृतियों को अभिव्यक्ति देकर युवा–पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य का पथ प्रशस्त करेंगे। साहित्य समाज आपकी साहित्य सर्जना के लिए सदैव आपका ऋणी रहेगा।

साहित्यानुरागी जनों के मानस–पटल पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ने वाले कथाकार कैलाशनाथ द्विवेदी सदैव अपनी रचना धर्मिता से यशस्वी बने रहें तथा साहित्याकाश में देदीप्यमान विविध विद्यामय नक्षत्रों के बीच आपकी कीर्ति यूं ही दमकती रहे। आपकी यशपताका सदैव नभोमण्डल में लहराती रहे। आपकी सारस्वत–यात्रा सतत प्रवाहमय रहें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्नि पुराण, 339.10*
2. *डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी, जय–पराजय , जया या पराजय, पृ.सं.–14*
3. *वही, वही, फूटी ढोलक, पृ.सं.–35*
4. *वही, वही, वह ममताभरी संध्या, 71*
5. *वही, वही, काजल की डिबिया, पृ.सं.–24*
6. *वही, वही, पथिक के साथी, पृ.सं.–133*
7. *अभिराज राजेन्द्र मिश्र, राङ्गडा प्राग्वाक्, पृ.सं.–06*
8. *डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी, जया या पराजय, पतन का वरदान, पृ.सं.–21*
9. *वही, वही, वह ममता भरी संध्या, पृ.सं.–73*
10. *वही, वही, भौतिकता की सीमा, पृ.सं.–89*
11. *वही, वही, अनागत, पृ.सं.–115*
12. *वही, वही, विभ्रम, पृ.सं.–143*
13. *वही, वही, समर्पण, पृ.सं.–03*
14. *डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, अभिनवकाव्यालंकार, पृ.सं.–03*
15. *डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी, जय–पराजय , पतन का वरदान, पृ.सं.–19*
16. *वही, वही, तीर्थयात्रा, पृ.सं.–31*
17. *वही, वही, कर्तव्य की वेदी पर, पृ.सं.–67*
18. *वही, वही, तीर्थ यात्रा, पृ.सं.–31*
19. *वही, वही, परिष्कार, पृ.सं.–49*
20. *वही, वही, मुस्कान का लुटेरा, पृ.सं.–50*
21. *वही, वही, वह ममताभरी संध्या, पृ.सं.–72*
22. *डॉ. कपिल देव द्विवेदी, निबन्धशतकम्, पृ.सं.–*
23. *डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी, जय–पराजय , फूटी ढोलक, पृ.सं. –37*
24. *वही, वही, टकराता मातृत्व, पृ.सं.–64*
25. *वही, वही, वह ममता भरी संध्या, 75*

26. वही, वही, परित्यक्ता, पृ.सं.–85
27. वही, वही, कर्तव्य की वेदी पर, पृ.सं.–67
28. वही, वही, टकराता मातृत्व, पृ.सं.–58
29. आचार्य मम्मट, काव्यप्रकाश, 08,02
30. डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी, जय–पराजय , अनुरोध, पृ.सं.–103
31. वही, वही, परिष्कार, पृ.सं.–49
32. वही, वही, मुस्कान का लुटेरा, पृ.सं.–52
33. वही, वही, टकराता मातृत्व, पृ.सं.–57